International Indexed & Refferred Research Journal, ISSN-2250-2599; Vol. I* ISSUE -1 Oct., 2012

बाणभट्ट की आत्मकथा – दार्शनिक अराजकतावाद का अपूर्व घोषणा पत्र

(Banbhatt Ki Atamkatha - A Manifesto of Philoshophical Anarchism)

* सुनिल कुमार

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के साहित्य, प्रधानतः औपन्यासिक साहित्य की आज–तक जो समीक्षाएँ लिखी गई हैं, मैं उन सभी को अधूरी मानता हूँ, जो लोग केवल उनको भारतीय धर्म, सभ्यता और संस्कृति का आख्याता मात्र कहते रहे हैं, उनकी दृष्टि केवल ऊपरी धरातल तक पहुँची हैं, आवरण को भेदकर उनके अंतःस्थल अथवा हृदय को छू नहीं सकी।

भारतीय धर्म, सभ्यता और संस्कृति के घूर्ण्य आवरण के बीच भी उनका महान दार्शनिक अराजकतावादी व्यक्तित्व विलीन अथवा धूलि–धूसर नहीं हुआ है। महात्मा गाँधी जैसे प्रख्यात भारतीय अराजकतावादी दार्शनिक के बाद वे भारत के दूसरे महान दार्शनिक अराजकतावादी हैं, साहित्य जगत में वे हिन्दुस्तान के प्रथम साहित्यिक सिद्धान्तवादी दार्शनिक अराजकता वादी कहे जा सकते हैं। जहाँ महात्मा गाँधी और विनोबा भावे जैसे प्रख्यात भारतीय महापुरूषों ने अराजकतावादी व्यवस्था रूपी साध्य की प्राप्ति के लिए राजनीति को साधन के रूप में स्वीकार किया। वहीं आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी जैसे विद्वान ने विख्यात सोवियत साहित्यकार टॉलस्टॉय की भाँति साहित्य को अराजकतावादी व्यवस्था की प्राप्ति के लिए साधन के रूप में अपनाया है। उन्होंने अपने साहित्य प्रधानतः औपन्यासिक रचनाओं के माध्यम से दार्शनिक अराजकतावाद (एक आधुनिक राजनीतिक विचारधारा) की अपूर्व प्रतिष्ठापना की है।

यहाँ संक्षेप में 'दार्शनिक अराजकतावाद' की अवधारणा को स्पष्ट कर देना समीचीन होगा। 'दार्शनिक अराजकतावाद' में दो शब्द हैं, 'दार्शनिक' और 'अराजकतावाद'। यहां 'दार्शनिक' शब्द का अभिप्राय अहिंसक दृष्टिकोण से है, यानि 'दार्शनिक' और 'अहिंसा' एक दूसरे से पर्याय हैं। दूसरे शब्द 'अराजकतावाद' का अभिप्राय किसी प्रकार की अव्यवस्था से नहीं है, बल्कि ऐसी व्यवस्था से है जो पूर्ण रूप से राज्य विहीन, सैन्य संगठन विहीन, धर्म विहीन, निजी सम्पत्ति शून्य तथा वर्ग विहीन व्यवस्था हो।

इस प्रकार शांतिपूर्ण अहिंसक साधनों द्वारा राज्य विहीन, सैन्य शक्ति विहीन, निजी सम्पत्ति शून्य, धर्म विहीन, वर्ग विहीन व्यवस्था रूपी साध्य को प्राप्त करना ही दार्शनिक अराजकतावाद है। निष्कर्षतः 'दार्शनिक' शब्द अहिंसक साधनों तथा 'अराजकतावाद' राज्य विहीन, सैन्य शक्ति विहीन, निजी सम्पत्ति विहीन, धर्म विहीन, वर्ग विहीन व्यवस्था का पर्याय है।

द्वितीय विश्वयुद्ध की महा भयावह त्रासदी ने आचार्य हजारी प्रसाद के अन्तरतम को आलोड़ित करके रख दिया, उनकी आत्मा रो उठी। 'बाणभट्ट की आत्मकथा' के उपसंहार से उद्धृत उनके इस कथन में – ''तुमने युद्ध के घिनौने समाचार पढ़े होंगे, लेकिन उसके वास्तविक निर्घृण क्रूर रूप को तुम लोगों ने नहीं देखा देखते तो मेरी ही तरह तुम लोग भी मनुष्य जाति की जय यात्रा के प्रति शंकालु हो जाते। यह अच्छा ही हुआ कि तुमने यह घृणित नरसंहार नहीं देखा, यह मनुष्य का नहीं, मनुष्यता के वध का दृश्य था।''

युद्ध के प्रति इस घोर वितृष्णा ने आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी को राज्य, शासन और धर्म का विकट विद्रोही बना दिया और 'बाणभट्ट की आत्मकथा' में उनकी आत्मा पुकार उठी –''मेरा मन कहता है कि जब तक राज्य रहेंगे, सैन्य संगठन रहेंगे, पौरूष दर्प का प्राचुर्य रहेगा तब तक यह होता ही रहेगा।''

राज्य, सेना संगठनों और पौरूष दर्प की इन विध्वंसात्मक वृत्तियों से आहत होकर एक अराजकतावादी की तरह, उन्होंने राज्य, सेना और धर्म जैसी संस्थाओं को अनावश्यक, अनित्य और अन्ततः नश्वर घोषित कर दिया यथा–''आज के धर्म कर्म के आयोजन, सैन्य संगठन और राज्य विस्तार विधि रूप है। उनमें अपने आप को दूसरों के लिए गला देने की भावना नहीं है। इसलिए वे एक कटाक्ष पर ढह जाते हैं, एक स्मित पर बिक जाते हैं, वे फेन बुदबुद की भाँति अनित्य हैं, वे सैकत सेतु की भाँति अस्थिर हैं, वे जल रेखा की भाँति नश्वर हैं।

उनमें अपने आप को दूसरों के लिए मिटा देने की भावना जब तक नहीं आती, तब तक वे ऐसे ही रहेंगे। उन्हें जब तक पूजा हीन दिवस और सेवाहीन रात्रियाँ अनुतप्त नहीं करती और जब तक निष्फल अर्ध्यदान उन्हें कुरेद नहीं देता तब तक उनमें करूणा, अहिंसा, प्रेम भावना आदि मांगलिक वृत्तियों का अभाव रहेगा और तब तक वे केवल दूसरों को दुख दे सकते हैं।''

राज्य की इस दुखदायी प्रवृत्ति में मनुष्य की मांगलिक वृत्तियों, अहिंसा, करूणा, प्रेम आदि कोई सहयोग नहीं है, राज्य की प्रकृति ही मूलतः विध्वंसात्मक है, उसका आधार ही शक्ति है और हिंसा का वह घनीभूत रूप है।..... और जब तक राज्य व सैन्य संगठन रहेंगे। संसार में ये विभत्स युद्ध और जुगुप्साकारक, घिनौने, घृणित दृश्य पुनरावृत्त होते रहेंगे। स्वयं आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के शब्दों में –''संसार में यह विकट घृणित दृश्य (युद्ध) पहली बार नहीं दिखाई दिया है, यहीं इसकी समाप्ति भी नहीं है.... यह घिनौना दृश्य संसार में बार–बार दिखाई देगा. .... क्या यह कभी बंद नहीं होगा ? मेरा मन कहता है कि जब तक राज्य रहेंगे, सैन्य संगठन रहेंगे, पौरूष दर्प का प्राचुर्य रहेगा तब तक यह होता ही रहेगा।''

और जब तक यह मनुष्यता का वध होता रहेगा–संसार में चरम अशांति और निरानंद जीवन के बीच जीवन शक्ति का हास होता रहेगा। अर्थात् ''यह धर्म कर्म का विशाल आयोजन, सैन्य संगठन और राज्य व्यवस्थापन सब फेन बुदबुद की भांति विलुप्त हो जाएंगे क्योंकि (करूणा जैसे सृष्टि के मूल भाव एवं मांगलिक वृत्तियों) का इसमें सहयोग नहीं है.......... यह सारा ठाठ–बाट संसार में केवल अशांति पैदा करेगा।''

निष्कर्षतः आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के अनुसार राज्य एक अनावश्यक संस्था है। और सैन्य संगठनों जैसी बाध्यकारी शक्तियाँ इसकी अनावश्यक बुराइयाँ है। उनके अनुसार ये राज्य सेनाएँ, सम्पत्ति, धर्म, वर्ग आदि मनुष्य की अपरिमित आकाँक्षाओं और दुर्दम्य वासनाओं के परिणाम हैं। इस संबन्ध में 'बाणभट्ट की आत्मकथा' में उन्होंने लिखा है – ''राज्य गठन, सैन्य संचालन, मठ स्थापन और निर्जन वास पुरूष की समताहीन, मर्यादाहीन, श्रृंखलाहीन महत्वाकांक्षा के परिणाम हैं।''

राज्य के बाद आचार्य द्विवेदी ने उसकी बाध्यकारी शक्ति सेना जिसके माध्यम से मेदिनी मानव रक्त से पिच्छिल हो उठती है, का घोर विरोध किया है। सेनाओं के माध्यम से राज्य विस्तार की यह अदम्य लालसा – रक्त लोलुपता– यह मनुष्यता का वध –इन सबसे, वे मनुष्य की जय यात्रा के प्रति शंकालु हो उठते हैं – ''शायद मेदिनी मानव रक्त से पिच्छिल हो जाएगी, शस्य क्षेत्र कुर्बर भस्म में रूपान्तरित हो जायेंगे, जनपद दस्युओं द्वारा आरोपित वह्नि शिखा में होम हो जाएँगे, नर कंकालों की राशियों से मार्ग दुर्लंघ्य हो उठेंगे – विकराल काल का तांडव, आर्यावृत्त को घृणित हाहाकार में पटक देगा .... हे भगवान क्या यह रक्त स्नान रोका नहीं जा सकता ? क्या राजाओं और सामंतो की हठधर्मिता की चक्की में इसका रहा सहा उपाय भी पिस जायगा ?''

आत्मरक्षा के अधिकार के नाम पर इन आधुनिक संप्रभु राज्यों की वेतन भोगी सेनाओं को आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने अमान्य ठहराया है, वे आत्मरक्षा के लिए, इन आधुनिक संप्रभु राज्यों की वेतन भोगी सेनाओं के स्थान पर 'जन संघटन अथवा जन सेना को मान्यता देते हैं, 'बाणभट्ट की आत्मकथा' में स्पष्ट कहते हैं कि – ''इस दुर्द्धर्ष म्लेच्छवाहिनी का सामना राजपुत्रों की वेतन भोगी सेना नहीं कर सकेगी .... राजपुत्रों की वेतन भोगी सेना की आशा छोड़ो ....ब्राह्मण से लेकर चांडाल तक एक हो जाओ .... चट्टान की तरह दुर्भेद्य एक ...... तुवरमिलिंद और हर्षदेवी सदा नहीं रहेंगे .... परन्तु तुम्हें सदा रहना है।''

राज्य ओर उसकी वेतन भोगी सेनाओं की समाप्ति के बाद वे आत्मरक्षा के अधिकार की रक्षा अराजकतावादी की भांति स्वयं जनता पर छोड़ते हैं। वे जनता को उद्बोधित करते हुए लिखते हैं कि – ''राजाओं का भरोसा करना प्रमाद है, राजपुत्रों की सेना का मुँह ताकना कायरता है, आत्मरक्षा का भार किसी एक जाति पर छोड़ना मूर्खता है .... उन देवपुत्रों की आशा छोड़ों जो सामान्य शोक के आघात से छुई–मुई की भाँति मुरझा जाते हैं, तुम जिस आधार (राजपुत्रों की वेतन भोगी सेनाओं) पर खड़े होने जा रहे हो .... वह बहुत दुर्बल है .... अमृत के पुत्रों आंधी की भाँति बहो, तिनके की भांति म्लेच्छ वाहिनी को उड़ा ले जाओ .... उठो भेद भाव भूल जाओं ..... प्रत्यंत दस्यु आ रहे हैं . ... कौन है जो आर्यावृत्त को हाहाकार के बवंडर से बचायगा ? .... आर्यावृत्त के जवान ! .... जवानों प्रत्यंत दस्यु आ रहे हैं .... अमृत के पुत्रों मरण यज्ञ की आहुति बनो, माताओं के लिए, बहिनों के लिए कुल ललनाओं के लिए प्राण देना सीखो। उठो जवानों प्रत्यंत दस्यु आ रहे हैं।''

इन आधुनिक संप्रभु राज्यों की अत्याधुनिक सशस्त्रों से सुसज्जित विकट वाहिनियों, उनकी रक्त लोलुपता उनके द्वारा रचित ये त्रासद युद्ध इन सभी के प्रति वे बहुत शंकालु हैं। वे यथासमय प्रश्न कर बैठते हैं – 'क्या धरित्री रक्त स्नान से बच जायगी या और भी डूब जाएगी ? और क्या महामाया सचमुच त्रिपुर भैरवी सुंदरी इस घृणा और जुगुप्सा के जगत को सुन्दर क्यों नहीं बना देती है। क्या तुम विकराल तांडव से धरित्री पर महानाश का खेल खेलती रहोगी। कहाँ है रूद्राणी वह तुम्हारा दक्षिण मुख, वह सुकुमार भाव, वह शामक हास्य, वह मनोरम भंगिमा ! जो कातर जगत को शांति दे सके, जो व्याकुल विश्व को सांत्वना दे सके, जो धरती को रक्त स्नान से बचा सके।''

इस तरह द्वितीय विश्व युद्ध के बाद राज्य, सेना, युद्ध और शासन के प्रति घोर वितृष्णा ने आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के मानस मंडल में 'बाणभट्ट की आत्मकथा' नामक कृति को जन्म दिया जिसे अराजकतावाद का साहित्यिक घोषणापत्र कहा जा सकता है। इस कृति का नायक बाणभट्ट पुरातन युग का पुरूष न होकर आधुनिक बौद्धिक वर्ग का अभिव्यंजक है।

बाणभट्ट के रूप में स्वयं आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी एक आधुनिक राजनीतिक विचारधारा अराजकतावाद (Anarchism) का पोषण कर रहे हैं। लेकिन वे जिस अराजकतावादी व्यवस्था का स्थापन चाहते हैं वह क्रांतिकारी साधनों द्वारा नहीं बल्कि शाँतिपूर्ण अहिंसक साधनों द्वारा राज्य, शासन, सेना, धर्म, वर्ग, निजी सम्पत्ति, युद्ध आदि का अंत करना चाहते हैं। इसलिए उनके अराजकतावाद को दार्शकिन अराजकतावाद कहा जा सकता है। क्योंकि यहां 'दार्शनिक' शब्द का अभिप्राय 'दर्शन' से नहीं, बल्कि वह 'अहिंसा' का पर्याय है।

आचार्य द्विवेदी महात्मा गांधी की भांति हृदय परिवर्तन के सिद्धान्त में आस्था रखते हैं, इसलिए वे अहिंसक रूप से शांतिपूर्ण साधनों द्वारा अराजकतावाद की स्थापना चाहते हैं। यथा – ''भट्ट तुम इस म्लेच्छ समझी जाने वाली निर्दयी जाति के हृदय में संवेदना का संचार कर सकते हो, उन्हें स्त्रियों का सम्मान करना सिखा सकते हो, तुम इस मरूभूमि के निर्झर हो, तुम्हारी वाणी मेरी जैसी अबलाओं में आत्मा शक्ति का संचार करती है।''

न केवल 'बाणभट्ट की आत्मकथा' में ही बल्कि उनके 'चारूचंद्र लेख' और 'पुनर्नवा' उपन्यासों में भी अराजकतावाद और दार्शनिक अराजकतावाद के तत्व प्रचुर मात्रा में मिलते हैं। 'चारू चन्द्रलेख' का प्रणयन भारत – चीन युद्ध के समय हुआ। अतः इस पर प्रत्यक्ष रूप से उसका प्रभाव देखा जा सकता है।

युद्ध के प्रति वितृष्णा तथा राज्य, शासन, सेना और धर्म तथा वर्ग व्यवस्था से दूर एक शांतिपूर्ण अराजकतावादी व्यवस्था के दर्शन इस उपन्यास में आसानी से किए जा सकते हैं। 'पुनर्नवा' उपन्यास में भी यत्र–तत्र दार्शनिक अराजकतावाद के दर्शन होते हैं। इसके अलावा उसके अनेक अन्य लेखों एवं गद्य साहित्य में भी दार्शनिक अराजकतावाद परिपुष्ट होता है। लेकिन 'बाणभट्ट की आत्मकथा' ही उनकी ऐसी एकमात्र कृति है जो पूर्ण अर्थों में दार्शनिक अराजकतावाद का अपूर्व घोषणा – पत्र है।

इस उपन्यास में सर्वत्र राज्य, शासन, सेना, सत्ता, शक्ति, व्यवस्था, युद्ध निजी सम्पत्ति, धर्म, वर्ग आदि संस्थाओं को अनावश्यक बुराइयां घोषित किया गया है। और इन सब संस्थाओं की अनावश्यकता ही अराजकतावाद का मूलाधार है।

'बाणभट्ट की आत्मकथा' एक राज्य–विहीन, शासन–विहीन, सेना–विहीन, सत्ता और शक्ति विहीन, युद्ध विहीन, वर्ग–विहीन, धर्म–विहीन और निजी सम्पति विहीन व्यवस्था का पूर्ण प्रचार है, यहाँ राज्य अस्थायी और नश्वर संस्था है, शासन और सत्ता एक अनावश्यक बुराई है, सेना और शक्ति मिथ्या तत्व है, वर्ग एक आडम्बर है, धर्म एक पाखंड और भुलावा है, निजी सम्पत्ति शोषण व दमन का साधन चक्र व चोरी है। .... इस प्रकार 'बाणभट्ट की आत्मकथा' पूर्ण अर्थों में दार्शनिक अराजकतावाद की कृति है .... वह दार्शनिक अराजकतावाद का अपूर्व घोषणा–पत्र है।

*** Research Scholar, Hindi Dept. Mohanlal Sukhadia University, Udaipur**

संदर्भ ग्रंथ

1. 'बाणभट्ट की आत्मकथा' – आचार्य द्विवेदी पृष्ठ संख्या : 233–34
2. वही पृ.सं. : 92–93
3. वही पृ.सं. : 120
4. वही पृ.सं. : 92–93
5. वही पृ.सं. : 119
6. वही पृ.सं. : 91
7. वही पृ.सं. : 182
8. वही पृ.सं. : 156–57
9. वही पृ.सं. : 203–04
10. वही पृ.सं. : 183
11. वही पृ.सं. : 207